CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

मोहन राकेश के नाटक:आषाढ़ का एक दिन में निहित आधुनिक युगबोध

डॉ. पूरणमल वर्मा
आचार्य हिन्दी
राजकीय महाविद्यालय टोंक
Email-verma.puru999@gmail.com, Mobile- 8239999466

सारांश

हिन्दी साहित्य में सभी विधाओं का अपना विशेष महत्व है। आधुनिक काल में कथा साहित्य, काव्य लेखन की ओर अग्रसर है। उसी भांति नाट्यशास्त्र की परम्परा के अनुसार नाटककारों ने बताया कि उनके नाटकों में अभिनय का बहुत ही सहज रूप में मंचन किया है। नाटकों में आधुनिकताबोध तथा समकालीन संवेदनाओं की अभिव्यक्ति एवं मोहन राकेश के सभी नाटकों में आधुनिकताबोध उपलब्ध है। यह युगबोध ही उन्हें एक सफल नाटककार बना देता है। आधुनिक सिनेमा तथा अन्रू दृश्य श्रव्य माध्यमों ने वस्तु तथा शिल्प के क्षेत्र के कई नूतन प्रयोग मोहन राकेश के नाटकों से ग्रहण किया है। राकेश की लेखन-शक्ति बहुमुखी थी। मोहन राकेश ने जिन रंगमंचीय तकनीकों का प्रयोग किया है उनका भी पूरा स्वागत भारतीय दृश्य कला जगत ने किया है। मोहन राकेश के नाटकों में आधुनिकताबोध यह युगबोध ही है जो कि उन्हें एक सफल नाटककार बना देता है। आधुनिक सिनेमा तथा अन्रय दृश्य श्रव्य माध्यमों ने वस्तु तथा शिल्प के क्षेत्र में कई नूतन प्रयोग मोहन राकेश के नाटकों से ग्रहण किया है। राकेश की लेखन-शक्ति बहुमुखी थी। मोहन राकेश ने जिन रंगमंचीय तकनीकों का प्रयोग किया है उनका पूरा स्वागत भारतीय दृश्यकला जगत ने किया है।

मुख्य शब्द : *मोहन राकेश, आधुनिक युगबोध आदि.*

(क)कथावस्तु में आधुनिकता

"आषाढ़ का एक दिन" मोहन राकेश का पहला सशक्त नाटक है। इस नाटक में आधुनिकता के विविध पहलू विविध स्तरों पर उपलब्ध है। अन्य नाटककारों से अलग तरीके का आधुनिक दृष्टिकोण ही राकेश में उपस्थित है।नाटक की कथा परम्परा से सम्बन्धित होते हुए भी परिपूर्ण रूप आज की विषमताओं,विसंगतियों, संवेदनाओं और तनावों से समृद्ध है। आषाढ़ का एक दिन' नाटक में ऐतिहासिक नाम होते हुए भी आधुनिकता की झलक है।नाटक का नायक कालिदास ऐतिहासिक नाममात्र है। वह आज के साधारण मनुष्य का प्रतीक है।वह आधुनिक मनुष्य के समान संवेदनाओं और पीड़ाओं के बीच में पड़कर दम घुटने वाला एक मनुष्य है। कालिदास की सर्जनाशक्ति को अपनी बाल सखी मल्लिका से प्रेरणा मिलती है। कालिदास और मल्लिका 'आषाढ़ का एक दिन' की वर्षा में खूब भीगकर पुलकित होकर नाटक के शुरू में प्रत्यक्ष होते हैं। यह घटना उन दोनों के अनुराग को व्यक्त करती है।

राकेश के नाटकों में जो आधुनिकता प्रस्तुत है उसे आज के कलाकारों और सिनेमा जगत ने अपनाया है। उसी तरह नाटक शुरू होते समय एक घायल मृग को गोद में लेकर नायक और उसकी सेवा में नायिका भी सामने खड़ी है। प्रेम जोड़ियों में मृगशावक भी अनुराग को उद्दीप्त करने में सहायक है। इस प्रसंग में भी राकेश ने आधुनिकता का प्रयोग किया है। मल्लिका भी एक साधारण यथार्थवादी ग्रामीण स्त्री है। मल्लिका की माँ के विरोध करने पर भी बेटी उसे मानती नहीं। वह करती है, "मैं वास्तव में अपनी भावना से प्रेम करती हूँ जो पवित्र है, कोमल है, अनश्वर है।" 1 मल्लिका का निःस्वार्थ प्रेम और सहनशक्ति उन्हें राजकवि बनने की प्रेरणा देती है।"मैं मानती हूँ तुम्हारे चले जाने से मेरे अन्तर में एक रिक्तता छा जायेगी। बाहर भी बहुत सम्भव है सूना प्रतीत होता फिर भी मैं अपने साथ छल नहीं कर रही...मैं यह कहती हूँ,तुम्हें जाना चाहिए।2 कालिदास जाने को तैयार नहीं है। आधुनिक जीवन में भी मल्लिका जैसी नारी है जो अपने प्रेमी या पति को उन्नति या स्थान मिलने के लिए दूर भेजने में हिचकती नहीं। कालिदास उज्जैनी जाकर बड़ा कवि बनता है।वहाँ के वातावरण के वश में पड़कर राजदुहिता से ब्याह करता है। उसके बाद वह मातृगुप्त नाम से विख्यात हुआ। इस समय उनके मन में सहानुभूति के अलावा और कुछ नहीं। राजमहल में सभी प्रकार की सुख-सुविधाएँ होने पर भी कालिदास का मन अस्वस्थ था। उनकी शृजनशक्ति मिट जाने से उसे निराशा हुई। अन्त में शासक के रूप में वे असफल होते हैं,उन्हें ऐसा लग रहा था कि उनकी शृजनशक्ति मिट जाएगी। उनके मन में गाँव की रमणीयता और मल्लिका के सहज प्रेम की स्मृति महसूस करने की इच्छा में वह वापस आता है। समय परिवर्तनशील होने के कारण मल्लिका एक पत्नी और माँ बन गयी थी। कालिदास एक बड़ी वर्षा के दिन मल्लिका के घर पहुँचता है। उन दोनों का मिलन

वास्तव में "भावना में भावना का वरण ही था।" इसी बीच अन्दर के कमरे से बच्ची रोने की आवाज सुनकर मल्लिका कहने लगी कि "यही मेरा यथार्थ है।"कालिदास निराश होकर आषाढ़ की वर्षा में बादलों के गरजने के बीच चला जाता है यहाँ कालिदास की जो स्थिति विशेष हुई उसी प्रकार की स्थिति आज के मनुष्य में भी साधारण है। यही आधुनिक मनुष्य की नियति है मल्लिका के मन में कालिदास के साथ वर्षा में भीगकर जाने की इच्छा है लेकिन अपनी बच्ची की आवाज उन्हें पीछे हटाती है। आधुनिक दुनिया की अनेक नारियों का प्रतिनिधि बनकर मल्लिका हमारे सामने प्रत्यक्ष होती है। इस नाटक के अधिकांश भाग आधुनिक जीवन से जोड़कर ही लिखा है। नाटक की कथावस्तु आधुनिकता के धरातल पर ही शुरू की है। राकेश के नाटकों में आज के जीवन की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति प्राप्त है। कालिदास कलाकार या साहित्यकार की नियति का प्रतीकमात्र है। कालिदास का बिखराव, टूटन, अलगाव और नियति आज के मानव की ही नियति है। यही आधुनिक जीवन में प्रतिबिम्बित है। कालिदास एक व्यक्ति ही नहीं, हमारी सृजनात्मक शक्तियों का प्रतीक है। नाटक में वह प्रतीक उस अन्तर्द्वन्द्व को संकेतित करने के लिए है जो किसी भी काल में सृजनशील प्रतिभा को आन्दोलित करता है।3

आषाढ़ का एक दिन' में आधुनिकता के साथ समकालीनता का स्पन्दन भी है। इस नाटक की आधुनिकता की चर्चा करते हुए डॉ. इन्द्रनाथ मदान ने जो कहा है वह सार्थक है। उन्होंने लिखा है- "इसमें कालिदास को अपने परिवेश से कट जाने का संकेत है। कृतिकार के अपवादित होने का संकेत है,उसके असाधारण होने का संकेत है। राजनीति और साहित्य में होड़ का संकेत है,घर की चीज या आदमीयता की खोज का संकेत है।"4 कालिदास को आज के युग की विडम्बना के मध्य में खड़े होते पाते हैं। अलगाव और बिखराव ही उनकी समस्या है।अपने परिवेश से उखड़ जाने के कारण उन्हें जो संत्रास,तनाव,अकेलेपन,शुष्कता,शून्यता और सम्बन्धहीनता के वातावरण में जीना पड़ता है वह वास्तव में आधुनिक मानव की नियति है। आधुनिक जीवन में सर्वत्र व्यापत 'अलगाव की स्थिति की ओर राकेश ने संकेत दिया है। 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के अन्त में कालिदास वापस आता है। यह उनकी विवशता और पतन का सूचक है। वह अपने घर में लौट आते समय खूब थका हुआ है। टूटा हुआ है और उन्हें मल्लिका पहचान ही नहीं पाती।इन संवादों से यह सिद्ध होता है - "सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता. .. यथार्थ है कि मैं यहाँ हूँ।"5 कालिदास अपने ही निवास स्थान में अपने को अपरिचित अकेला और अजनबी महसूस करता है।यह आधुनिक मानव की असली नियति है। यहाँ आधुनिकता स्पष्ट है। आज का मनुष्य अपने घरवालों के बीच भी अपरिचित-सा होता है क्योंकि वह अपने स्वर्ग बनाने की प्रतीक्षा में दूर-दूर जाता है और अन्त में अपने ही परिवेश में लौट आता है।आज के विसंगतिपूर्ण जीवन का संकेत राकेश के नाटकों की कथावस्तु में मिलता है। यान्त्रिक युग की सविशेषता यह है कि मनुष्य को अपने बन्धुओं और स्वदेशियों से बेखबर रहकर अन्त में सब कुछ खोया हुआ-सा लौट जाना पड़ता है। कालिदास बड़ी प्रतीक्षा के साथ अपना सब कुछ छोड़कर घर लौटता है लेकिन समय के परिवर्तन के कारण निराश होकर उन्हें फिर लौट जाना पड़ता है। यह आधुनिक मानव की विडम्बना है। जो भी हो कालिदास आधुनिक मानव है और उसका संकट आधुनिक कलाकार का संकट ही है। डॉ.कथूरिया ने इस प्रकार कहा है- "आधुनिक भाव बोध सम्पन्न कलाकार शारीरिक संसर्ग को प्रेम में बाध नहीं मानते ।"6 एक कलाकार हमेशा मानसिक द्वंद्व से पीड़ित है।

(ख) नामकरण में आधुनिकता

मोहन राकेश का पहला महत्त्वपूर्ण नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' है। इस नाटक का नामकरण बहुत ही व्यंजनापूर्ण एवं सार्थक है । साधारण रूप से नाटक की प्रमुख घटना से सम्बन्धित ही नामकरण करते हैं । महान् कवि कालिदास की कृति मेघदूत में'आषाढस्य प्रथमः दिवसे' वाली पंक्ति मिलती है। कालिदास के भावों से जुड़े अपने नाटक का नामकरण राकेश ने आषाढ़ का एक दिन रखा होगा। सुषमा अग्रवाल का मत इस सम्बन्ध में इस प्रकार है कि "नाटककार ने अपनी सूझ-बूझ से उस दिन विशेष को अपनी भावना सम्पदा प्रदान कर नामकरण का आधार बनाया है।" 7 राकेश परम्परावादी नहीं था। उन्हें आधुनिकता के प्रति मोह है। इस नाटक की शुरुआत एक वर्षा में भीगकर पुलकित उल्लसित होती है। यह इस नाटक का एक मार्मिक प्रसंग है। उसी प्रकार कालिदास एक बड़ी वर्षा के समय ही मल्लिका के घर से निवासित भी होता है। इस प्रकार नाटक का 'अर्थ'और 'शर्त' आषाढ़ की वर्षा में ही सम्पन्न होती है। इस कारण यह नामकरण अत्यन्त सार्थक है। नाटक में कहीं-कहीं आषाढ़ की प्रथम वर्षा की खूब चर्चा भी होती है। इस नामकरण में राकेश के आधुनिक भाव बोध का सुगन्ध है और भावात्मक संवेदना भी है। डॉ.ऊर्मिला मिश्र ने कहा कि राकेश के नाटकों की आधुनिकता के कई स्तर है। पिछले सभी तरह के नाटकों से अपने नाटकों को अलग करने में वे अपनी आधुनिकता स्थापित करते हैं।8 नाटक के आरम्भ में जो वर्षा हुई वह मल्लिका के जीवन का सबसे शुभ मुहूर्त था।उसे वह अपने जीवन का अमूल्य भाग्य मानती है। लेकिन नाटक समाप्त होते ही जो वर्षा हुई वह मल्लिका के लिए दुर्भाग्य का दिन है।वह उसके जीवन में काली रेखा छाँटकर गयी है। कालिदास का वियोग मल्लिका के मन को कसता था।यह कसाव जीवन भर उसे भोगना पड़ता है। वास्तव में इस नाटक की मूल संवेदना एक प्रेयसी की नियति है। यह आधुनिक नारी की ही स्थिति एवं गति है।इस दृष्टि से देखने में भी हमें यह नामकरण अत्यन्त अनुयोज्य लगता है।नामकरण में एक प्रकार की कलात्मकता भी है। ये सब राकेश के आधुनिकताबोध का सूचक है।

(ग) शिल्प विधान में आधुनिकता

नाटक का प्रमुख एवं सशक्त पक्ष शिल्प विधान ही है। यह वास्तव में नाटक की आत्मा है।शिल्प विधान की सफलता ही नाटककार की सफलता है । 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक का शिल्पपक्ष आधुनिक ढंग पर ही गठित है। उनके नाटकों में जीवन की यथार्थ चेतना के प्रति जागरूकता है। राकेश ने नाटक को थियेटर के सन्दर्भ में देखा। राकेश की शिल्प विधान के सम्बन्ध में तनेजा ने कहा-"हिन्दी नाट्य साहित्य में भारतेन्दु के बाद यदि लीक से हटकर कोई नाम उभरता है तो मोहन राकेश का।"8 पात्र और चरित्र चित्रण शिल्पपक्ष की एक सशक्त कड़ी है। कालिदास और मल्लिका इस नाटक के प्रमुख जीवन्त पात्र हैं। वे दोनों आधुनिक मानव के प्रतीक हैं। कालिदास ऐतिहासिक पात्र होते हुए भी आधुनिक संवेदनाओं के जगत में साँस लेने वाला एक कलाकार है। कलाकार और राज्यश्रय की नियति इस नाटक कीएक प्रमुख समस्या है। यह आधुनिक काल की नारियों की विडम्बना है। एक कलाकार कभी भी स्वतन्त्र होकर जी नहीं सकता। कलाकार के लिए राजाश्रय और सृजनकार्य दो नावों में पाँव रखकर यात्रा करने के समान खतरनाक है। सत्ता कलाकार की सर्जनाशक्ति को शुष्क बना देती है। इस नाटक के नायक की नियति से लगता है कि मनुष्य भी चुनाव का स्वातन्त्र्य नहीं है तो लोग गलत मार्ग को अपनाएगा। सत्ता कलाकारों के सपनों को मिट्टी में मिला देती है। खंडित व्यक्तित्व वाले नायक कालिदास आधुनिक कलाकार का प्रतीक है।उसी प्रकार मल्लिका एक समर्पित प्रेयसी है।स्त्री कितनी ही सेवा,त्याग और प्रेम आदि सद्गुणों से सम्पन्न क्यों न हो फिर भी उसे दुख ही अन्त में सहना पड़ता है। यह स्त्री का एक दुर्भाग्य ही है। वह कितना ही पवित्र बनना चाहती है उतना ही अपवित्र बन जाती है। मल्लिका के द्वारा राकेश ने वर्तमान भारत की नारी का गौरव ऊँचा उठाया है।वह किसी के सामने झुकने वाली नहीं। मल्लिका प्रेम की अनश्वर मूर्ति है। आधुनिक नारी की विधि ही मल्लिका ने पहले ही भोगी है।अम्बिका एक पीड़ित यथार्थवादी स्त्री है।अधिकांशतः विधवा स्त्रियों का मन इस प्रकार कठिन यथार्थवादों से भरा है।अम्बिका आधुनिक विधवा वर्ग का प्रतीक है।वे सब अपनी बेटियों की इच्छा से इस प्रकार की विमुखता दिखाती है। वह कहती है-"माँ का जीवन भावना नहीं कर्म है।"9

विलोम खलनायक होते हुए भी शान्त और सब कुछ अपने आपमें छिपने वाला व्यक्ति है।लेकिन उनके बोलचाल में त्याग की छाया

हमेशा दिखाई पड़ता है। कालिदास विलोम से दुर्बल पात्र है। कालिदास से बढ़कर विलोम चतुर एवं संयमित है। वह समयानुकूल कार्य व्यवहार में कुशल है। उनके मन में दुरभिमान लेशमात्र भी नहीं है। मल्लिका कितनी भर्त्सना करने पर भी वह उसे मिलना चाहता है। प्रियंगुमंजी के अहं के कारण ही वह जान-बूझकर मल्लिका के यहाँ आती है। घर का पुनरुत्थान करने की बात भी उनके अहं की सूचना है। इसमें आधुनिकता की अधिक झलक है। सत्ता मिलने वाले उन्नत अधिकारियों के सम्बन्ध में भी इस प्रकार का अटल विश्वास है। अपने इष्टजनों और अनुयायियों को जो भी प्रदान कर सकता है। यही आधुनिक काल की स्थिति है। इस नाटक के सभी पात्रों के चरित्रों में आधुनिकता जुड़ गयी है।राकेश के अधिकांश पात्र अन्तर्मुखी प्रवृत्ति के ही हैं। वे समाज में रहते हुए भी अपना भिन्न अस्तित्व लिये हुए हैं। दूसरे के अस्तित्व को नकारने के कारण भीड़ में भी वे स्वयं को अकेला और अजनबी महसूस करते हैं।10 इस प्रकार के पात्र चित्रण ही आधुनिकता का परिचायक है। विलोम का चित्रण भी अत्यन्त आधुनिक ढंग से राकेश ने चित्रित किया है। आज खंडित व्यक्तित्व वाले आदमी ही अधिक पाते हैं। डॉ. टी. आर. पाटील ने कहा कि "खंडित व्यक्तित्व एक मानसिक समसामयिक विकार है।"11 कालिदास भी इस प्रकार का एक व्यक्ति है।

संवादयोजना में आधुनिकता

आषाढ़ का एक दिन नाटक में संवाद योजना आधुनिक ढंग पर हुई है। नाटक का धरातल ऐतिहासिक है और भाषा संस्कृत गर्भित है। फिर भी संवादों में आधुनिकता है। नाट्य भाषा की तलाश में राकेश लगे रहे और उसमें वे विजयी भी हुए । राकेश के संवादों की एक विशेषता यह है कि उनका संवाद अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। राकेश की संवाद योजना पर विचार करते हुए डॉ. बंसल ने लिखा है कि "ये संवाद बहुत बड़े होकर भी बड़े नहीं हैं क्योंकि पात्र उन्हें लगातार बोलता नहीं जाता, कभी अतीत में झाँकता है, कभी वर्तमान में लौट आता है, कभी ढंग का अनोखा ही है तथा बड़ा ही आहलादकारी और रोमांचक है।"12 इससे बढ़कर राकेश के संवाद तीखे और व्यंग्यपूर्ण हैं। मल्लिका का संवाद कुछ लम्बा है फिर भी रोचक एवं मर्मस्पर्शी है। उदाहरण के लिए "मैं यद्यपि तुम्हारे जीवन में नहीं रही परन्तु तुम मेरे जीवन में सदा बने रहे हो। मैंने कभी तुम्हें अपने नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे, और मैं समझती रही कि मैं सार्थक हूँ, मेरे जीवन की भी कुछ उपलब्धि है।"13 इस संवाद में कितनी प्रेम विह्वलता एवं मर्मस्पर्शिता है। इसमें आधुनिकता टपकती है। संवाद की महानता पर प्रकाश डालते हुए मदनलाल ने कहा है कि - "संवाद ही वह सशक्त उपकरण है जो नाटक को देशकाल एवं अपने वातावरण के अनुरूप सिद्ध करता है। पात्रों के अनुरूप वाणी प्रदान कर युग के अनुरूप शब्द विन्यास द्वारा संवाद इस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पादित करता है।"14 इस नाटक के संवाद नाटक की गति में बहुत ही सहायक हैं। सभी पात्रों के संवाद अपने चरित्र और आत्म अनुभूति को व्यक्त करने वाला है। उदाहरण देखिए- अभाव तुम थे, वह दूसरा नहीं हो सका। परन्तु अभाव के कोष्ट किसी दूसरे को जाने कितनी-कितनी आकृतियाँ हैं।15

मल्लिका और कालिदास का संवाद प्रेमी जनों के हृदय का यथार्थ उद्गार ही है। यहाँ रोमानी की छाया नहीं, आधुनिक धरातल पर सही जीवन है। ये दोनों एक होने की आशा से परस्पर मिलते हैं लेकिन अन्त में खंडित होने को अभिशप्त होते हैं। इसमें स्वगत भी अत्यन्त मर्मस्पर्शी है। राकेश ने जिस संवाद-योजना को अपनाया वह आधुनिक जगत् के लिए प्रकाश फैलाने योग्य है। व्यंजनापूर्ण शब्द प्रयोग भी आधुनिकता को व्यक्त करता है। कालिदास के वापस आते वक्त विलोम मल्लिका से कहता है-"तुमने अब तक कालिदास के आतिथ्य का उपक्रम नहीं किया? वर्षों के बाद एक अतिथि घर में आये और उसका आतिथ्य न हो? जानती हो, कालिदास को इस प्रदेश हरिणशावकों का कितना मोह...। एक हरिण शावक इस घर में भी है। तुमने मल्लिका की बच्ची को नहीं देखा? उसकी आँखे हर शावक से कम सुन्दर नहीं है,कहता है।"16 इन पंक्तियों में जिन व्यंगतापूर्ण शब्दों का प्रयोग राकेश ने किया है उससे काफी प्रेरणा राकेश के समकालीन नाटककारों को मिली है। विलोम के इन वचनों में खडगों से भी बढ़कर धार है और दूसरों पर गहरी चोट पहुँचाने योग्य है। राकेश की चुस्त एवं पुरैली भाषा प्रयोग बिल्कुल आधुनिक है। यह और कहीं प्राप्त नहीं। वास्तव में कहने पर वे आधुनिक नाट्य शिल्प के मसीहा थे। वास्तव में कहने पर वे आधुनिक चुटेली भाषा प्रयोग बिलकुल आधुनिक है। राकेश की संवाद-योजना की और एक विशेषता यह है कि वे संवादों के द्वारा पात्रों का चरित्र उद्घाटन बड़े मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करते थे। संवाद योजना में भी राकेश की नये प्रयोगों की तलाश स्पष्ट है।

(घ)स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के चित्रण में आधुनिकता:-

राकेश के सभी नाटकों की प्रमुख समस्या स्त्री-पुरुषों के सम्बन्धों की है। स्त्री-पुरुष सम्बन्धों की विडम्बना का यथार्थ चित्रण राकेश ने अपने नाटकों में किया है। 'आषाढ़ का एक दिन' का नायक कालिदास और नायिका मल्लिका की तनावपूर्ण कथा को लेकर नाटक आगे बढ़ता है। नायिका मल्लिका ही वास्तव में इस नाटक का केन्द्रबिन्दु है। लेकिन नायक की पत्नी बनने का सौभाग्य प्रियंगमंजरी को ही मिला है। उन दोनों का सम्बन्ध भी अत्यन्त दृढ़ नहीं है। राजकवि बनने के कारण कालिदास का ब्याह प्रियंगुमंजरी से होता है। कुछ बाह्य क्रमीकरणों के अलावा उन दोनों में कोई मेल नहीं। मल्लिका के प्रेम की गहराई के बारे में प्रियंगुमंजरी खूब परिचित थी। इसलिए वह एक बार अपने सखियों के साथ मल्लिका के घर में पहुँचती है। वह मल्लिका के सामने अपनी अहं प्रकट करती है। वह मल्लिका के घर के पुनरुत्थान की चर्चा भी करती है। मल्लिका को किसी के साथ ब्याह करा देने को भी वे तैयार थे। प्रियंगुमजरी को यह मालूम था कि कालिदास के मन के कोने में मल्लिका के प्रति सहानुभूति और प्रेम है। सत्ता वर्ग का अहं प्रियंगुमंजरी के शब्दों में प्रकट है।

मल्लिका एक त्यागमयी एवं सर्व परित्यागी प्रेयसी है। वह अपने से बढ़कर प्रेमी का यश चाहती है। इसलिए वह माँ से इस प्रकार कहती है- "मैं रो नहीं रहीं हूँ माँ। मेरी आँखों में जो बरस रहा हे वह दुख नहीं है। यह सुख है माँ सुख "... ... 17वह कालिदास को उज्जयनी भेज देने के लिए उत्सुक थी। मल्लिका आधुनिक नारी का प्रतिनिधित्व करती है। कीर्ति और यश के लिए अपने पति को दूर भेज देने को भी आधुनिक नारी तैयार है। कालिदास को महत्त्व प्राप्त होने पर मल्लिका को भी भूल जाता है। कालिदास के मन के कोने में मल्लिका की चिन्ता थी। मल्लिका कालिदास की सर्जनाशक्ति की प्रेरणा थी। अन्त में उसे सभी सत्ता और राजकीय सुखसुविधाओं को छोड़कर अपने ही गाँव में लौट आना पड़ता है। तब अपने ही घर में परायेपन का बोध होता है। कालिदास पहचानती नहीं हो...और न पहचानना भी स्वाभाविक है क्योंकि में वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहले पहचानती रही है। मल्लिका और मैं जो तुम्हें देख रही है वास्तव में में ही हूँ।18 इन कथनों से उन दोनों के अजनबीपन का बोध व्यक्त है। वे दोनों अलगाव से पीड़ित, परायेपन के बोध से टूटे हुए हैं। इस प्रकार प्रेमी और प्रेयसी की निकटता दूरी में बदल जाती है। मल्लिका कालिदास के सामीप्य से अत्यन्त पुलकित है। लेकिन कालिदास को एक अन्यथा बोध की लांछना मन में है। मल्लिका विलोम की धर्म पत्नी और बच्ची की माता होते हुए भी अपने प्रेमी कालिदास में आकृष्ट है। उसके मन का कोना अब भी रिक्त है। वहाँ और किसी को बिठाना वह नहीं चाहती है। इस प्रकार की विडम्बना आधुनिक कालीन अधिकांश नारियों में उपलब्ध है। यहाँ आधुनिकता बोध का चित्रण इस नाटक में खूब हुआ है। मल्लिका अपने वचनों द्वारा मन का कपाट खोलती है और कहती है, "मैंने कभी तुम्हें अपने से दूर नहीं होने दिया। तुम रचना करते रहे, और मैं समझती रही कि में सार्थक हूँ, मेरे जीवन की यही उपलब्धि है।19 इसका अर्थ है कि अब भी मल्लिका अभाव महसूस करती है। वह विलोम और बच्ची को पाने से भी इस अभाव की भावना से मुक्त नहीं होता है।राकेश ने नारी एवं प्रेयसी के यथार्थ मन का चित्रण इस नाटक में प्रस्तुत किया है। वह कालिदास के प्रेम से वंचित होने पर भी, कालिदास प्रियंगुमंजरी के पति होने पर भी, गाँव से गुजरकर जाते समय मल्लिका से न मिलन पर भी, कालिदास के बारे में वह बुरा नहीं मानती। मल्लिका को पूरा विश्वास था कि कालिदास उससे अलग नहीं हो सकता वे दोनों एक-दूसरे के

पूरक हैं। मल्लिका आशावादी हे वह हमेशा कालिदास के वापस आने की प्रतीक्षा में लगी रहती है। अन्त में कालिदास बड़ी प्रतीक्षा के साथ मल्लिका के घर पहुँचता है। वे दोनों अपने को भी भूलकर, परिस्थितियों को भी न मानकर बातें करते समय बच्ची की आवाज सुनती है, तब मल्लिका जल्दी ही वास्तविकता समझाकर उसे लेने जाती है। तब कालिदास को समय की परिवर्तनशीलता का बोध होता है। वह एक टूटा हुआ आदमी-सा दूर चला जाता है। मल्लिका को उसे बुलाने की इच्छा थी लेकिन गोद में बच्ची को पाकर चुप होती है।

सन्दर्भ सूची

1. मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 21
2.वही, पृ. 47,सन्दर्भ में, पृ. 302
3. मोहन राकेश, लहरों के राजहंस, पहली भूमिका, पृ. 8
4. डॉ. इन्द्रनाथ मदान, आधुनिकता और हिन्दी
5. मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 95
6. डॉ. सुन्दरलाल कथूरिया, समकालीन हिन्दी नाटक, पृ. 61
7. डॉ. सुषमा अग्रवाल, समकालीन नाट्य साहित्य और मोहन राकेश, पृ. 72
8.डॉ. ऊर्मिला मिश्र, आधुनिकता और मोहन राकेश, पृ. 109
9. डॉ. जयदेव तनेजा, आज के हिन्दी रंगनाटक परिवेश और परिदृश्य, पृ. 45 :
10.मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 1
11.डॉ. श्रीमती सुनीता श्रीमाल, मोहन राकेश का साहित्य : पारिवारिक सम्बन्धों के विघटन की स्थितियाँ, पृ. 225
12.डॉ. पी. आर. पाटली, समसामयिक हिन्दी नाटकों में खंडित व्यक्तित्व और अंकन, पृ. 18
13.डॉ. पुष्पा बंसल, परिशोध, पंजाब विश्वविद्यालय पत्रिका, पृ. 68
14.मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 99
15.मदनलाल, नाटककार मोहन राकेश संवाद-शिल्प,
16.मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, पृ. 100
17. वही, पृ. 106
18.वही, पृ. 48
19. वही, पृ. 1